2.3.1 छात्र केंद्रित तरीके, जैसे अनुभवात्मक शिक्षण, सहभागी शिक्षण और संवाद मोड के माध्यम से सीखना और ज्ञान ग्रंथों और काव्यों के शिक्षण में हेर्मेनेयुटिक्स का उपयोग, समस्या निवारण पद्धतियों का उपयोग सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

Student centric methods, such as experiential learning, participative learning and learning through dialogue mode and use of hermeneutics in the teaching of knowledge texts and Kavyas, problem solving methodologies are used for enhancing learning experiences

---

इस विश्वविद्यालय में छात्रों के लिए छात्र केंद्रित तरीके, जैसे अनुभवात्मक शिक्षण, सहभागी शिक्षण और संवाद मोड के माध्यम से सीखना और ज्ञान ग्रंथों और काव्यों के शिक्षण में हेर्मेनेयुटिक्स का उपयोग, समस्या निवारण पद्धतियों का उपयोग सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए किया जाता है। शिक्षक छात्रों के शास्त्रीय ज्ञान में वृद्धिहेतु विविध प्रकल्पों का सहारा लेते है। कुछ छात्र उन्नत छात्र होते है और कुछ सामान्य बुद्धि वाले छात्र होते हैं। इसलिए शिक्षक शिक्षण तकनीकों में छात्रों की क्षमता को ध्यान में रखकर शास्त्र पढ़ाते हैं। दोनों प्रकार की छात्रकेन्द्रित विधियाँ अधोदत्त है -

अनुभवात्मक शिक्षण- छात्र केन्द्रित शिक्षण विधियों में अनुभवात्मक शिक्षण विधि महत्त्वपूर्ण है। इसलिए यहाँ के शिक्षक अनुभवात्मक शिक्षण विधियों के माध्यम से छात्रों को धर्मग्रन्थ पढ़ाते है। साहित्य विभाग में रंगमंच, अनुभवी विषयों को नाटकों और अन्य माध्यमों से प्रकाशित करता है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के माध्यम से छात्रों को अनुभवात्मक ज्ञान हेतु अवसर प्रदान किया जाता है। वेद विभाग में वैदिक छात्रों को यज्ञ और अन्य माध्यमों से वेदों में उल्लिखित अनुष्ठानों से परिचित कराया जाता है। व्याकरण विभाग में शिक्षक वर्णमाला के उच्चारण को उच्चारित कराकर वर्णों के उच्चारण की पहचान करते है। ज्योतिष विभाग में हस्तरेखाओं, कुण्डलियों आदि का निर्माण तथा जातकों की भविष्यवाणी आदि सभी कार्य ज्योतिष विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा

ही किए जाते है। इसी प्रकार ज्योतिष विभाग में सञ्चालित 'ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श केन्द्र' के माध्यम से शिक्षक एवं विद्यार्थी अनुभवात्मक ज्ञान से परामर्श देने में समर्थ हैं। यहाँ स्वच्छता कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं और छात्र एक परिष्कृत व प्रसन्न मन और स्वस्थ शरीर का अनुभव करते हैं।

शिक्षक और छात्रों द्वारा इस प्रकार अनुभवात्मक शिक्षण विधि का उपयोग यहाँ के शिक्षकों द्वारा अपने अनुभवात्मक ज्ञान को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

सहभागी शिक्षण- इस विधि में छात्र शिक्षक के सहयोग से सूत्रान्त्याक्षरी, श्लोकान्त्याक्षरी, वाग्वर्धिनीसभा आदि का आयोजन करके एक दूसरे के साथ ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। वेद विभाग में छात्र वेदियाँ और अन्य वस्तुएं बनाकर वेद प्रतिपादित विधियों का अभ्यास करते हैं। विश्वविद्यालय परिसर में बहुत से मन्दिर है, जहाँ छात्र और शिक्षक रक्षा-बन्धन के अवसर पर उससे सम्बन्धित अनुष्ठान करते हैं। इस सहभागी पद्धति से ज्ञान की वृद्धि होती है। विश्वविद्यालय के बाहर भी छात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए सायंकालीन गंगा आरती आदि कार्यक्रम में भाग लेते हैं। शैक्षणिक भ्रमण एवं सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से विद्यार्थी नूतन वस्तु का अवलोकन कर ज्ञानवर्धन में सहभाग करते है।

संवाद के द्वारा सीखना- शास्त्रीय विषयों को पढ़ाने और सीखने में संवाद शिक्षण विधियाँ छात्रों के लिए उत्तम हैं। शिक्षक मुख्य रूप से छात्र और छात्राओं के मध्य परस्पर संवाद कराकर उन्हें सिखाते हैं। इसमें शिक्षण-विधियों तथा नाटकीय संवाद के माध्यम से साहित्य के पहलुओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। शास्त्रार्थ में संवाद का विशेष महत्त्व है। इसमें कुछ छात्र ऐसे होते हैं, जो पहले पहला पक्ष प्रस्तुत करते हैं और फिर दूसरे छात्र दूसरा पक्ष प्रस्तुत करते हैं। ऐसा करने से उन्हें शास्त्रों के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त होता है। मन्द गति से सीखने वाले छात्र विशेष रूप से संवाद की इस प्रक्रिया से लाभान्वित होते हैं। शास्त्रार्थ प्रक्रिया में कठिन विषय को भी बार-बार बोला जाता है, जिससे विषय सरल हो

जाता है। न केवल शास्त्रार्थ चर्चा में बल्कि कक्षा शिक्षण के समय भी छात्र प्रश्न पूछते हैं और अन्य छात्र उत्तर देते हैं। इससे कक्षा में संवाद क्रम बना रहता है।

काव्यशास्त्र के अधिगम में टीका व भाष्य पद्धति- इसके द्वारा शास्त्रीय पक्ष, मानवीय पक्ष और व्यवहारिक पक्ष सहज ही ग्रहण किया जाता है। शास्त्र और कविताएँ सूत्र के रूप में होती **है।** अतः अध्ययन व अध्यापन में अनेक कठिनाइयाँ प्रायः होती है। आसानी से छात्रों को समझाने के लिए टीका पद्धति का उपयोग किया जाता है। भाष्यविधि में सूत्रग्रन्थ और काव्य का अर्थ समझना सरल होता है। सामान्यतः पाठ्यक्रम में प्रति अध्याय विषय के अनुसार एक टिप्पणी उपलब्ध होती है। अनेक विषयों में टीकाओं को पाठ्यक्रम के रूप में स्वीकार किया गया है। काव्यों और ग्रन्थों के पूर्व पक्ष को प्रस्तुत करने और उत्तरार्द्ध के माध्यम से सिद्धान्तों को प्रदर्शित करने की विधि को 'भाष्य विधि' कहा जाता है। प्रस्तुत विधि का प्रयोग सभी शास्त्रीय विषयों में किया जाता है।

समस्या समाधान विधि- इस विश्वविद्यालय में छात्रों द्वारा शिक्षकों के सहयोग से शास्त्रीय ज्ञान को जागृत करने के लिए समस्याओं की खोज की जाती है और तदनुसार समाधान निर्धारित किए जाते हैं। विद्यार्थियों को काव्य पाठ पढ़ाने में समस्या समाधान का विषय विशेष रूप से सिखाया जाता है। इसमें कोई अक्षर छोड़ दिया जाता है जब किसी श्लोक के पाठ में कोई अक्षर जोड़ा जाता है। फिर छोड़ा गया अक्षर क्या है? जोड़ा गया अक्षर क्या है? इस प्रकार समस्या उत्पन्न की जाती है और समाधान दिया जाता है।

फिर अनेक पदों के समूह का उच्चारण करके वाक्य में कौन से शब्द का क्या अर्थ है ? इस प्रकार की समस्या उत्पन्न की जाती है। जिसका समाधान विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से करते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा 'अष्टावधानम्' नामक एक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जहाँ बहुत से छात्र एवं आचार्य समस्या उत्पन्न करते हैं, फिर एक ही व्यक्ति उन सभी समस्याओं का समाधान करते हैं। इस प्रकार यहाँ के विद्यार्थी इस विधि से समस्या समाधान में पारंगत हो जाते हैं।